समकालीन प्रमुख यात्रा वृत्तांतों की प्रकृति, प्रवृत्ति और समस्याओं का अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,
आगरा से हिन्दी में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध प्रबंध की
रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. प्रेमशंकर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर

शोधार्थी

दिगंबर सिंह

हिंदी विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा 282005

2022

प्रस्तावना और विषयवस्तु -

साहित्य की सर्वाधिक जीवंत व रोचक विधाओं में यात्रा वृत्तांतों का स्थान आता है। जिसमें साहसी और सहृदय घुमक्कड़ यात्री अपने यात्रा स्थलों का विहंगम दृश्यावलोकन करता है और उसे जो अनुभव होता है, उन्हें शब्दबध्य करता जाता है। इस प्रक्रिया में वह न सिर्फ स्थानों, दृश्यों का वस्तुनिष्ठ वर्णन करता है अपितु उन्हें आत्मपरक शैली में अपनी ज्ञान खोजी वृत्ति से नव प्रकाश डालता है।

भारत के प्राचीन इतिहास के अध्ययन में यात्रा वृत्तांतों का महत्वपूर्ण स्थान है । इसके बिना हम संभवत उस काल का यथोचित चित्र खीचने में पूरी तरह सफल ना होते। इस क्रम में हम पहले यात्रा वृत्तांतकार के रूप में इतिहास के पिता कहे जाने वाले हेरोडोटस को रख सकते हैं । उन्होंने अपनी यात्राओं के माध्यम से यूनान, फारस, भारत का सांस्कृतिक ऐतिहासिक अध्ययन किया। तत्पश्चात अनेक विदेशी यात्री यथा मेगास्थनीज जो चंद्रगुप्त मौर्य के शासन में आया था । लगभग 15 वर्ष भारत में रहकर भारत के तत्कालीन समाज, संस्कृति स्थापित लोक विश्वासों आदि का लेखन किया।जिसे इंडिका नामक पुस्तक में संकलित किया। इसी तरह डायमेकस जो बिंदुसार के शासनकाल में आया था। उसके द्वारा भी तत्कालीन भारतीय समाज संस्कृति की रोचक जानकारी मिलती है।

प्लिनी ने अपनी पुस्तक नेचुरल हिस्टोरीका में भारत और रोम के बीच होने वाल व्यापार, भारतीय समाज, पशु पक्षियों , जलवायु की व्यापक जानकारी दी हैं। वहीं चीनी यात्री जो भारत में बौद्ध धर्म दर्शन से आकर्षित होकर आए थे। उन्होंने न केवल बौद्ध धर्म की शिक्षा पाई अपितु अपनी जिज्ञासू वृत्ति से भारतीय समाज का भी रोचक वर्णन किया। इनमें फाह्यान , व्हेन सॉन्ग, एत्सिंग का विशेष उल्लेख किया जा सकता है । जिन्होंने तत्कालीन शिक्षा के केंद्र रहे नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा कर तत्कालीन समाज का चित्र खींचने का प्रयास किया।

साथ ही अरब यात्रियों में सुलेमान , अल मसूदी , अलबरूनी ने भी अपनी यात्राओं के माध्यम से भारतीय समाज के धर्म दर्शन यहां उपलब्ध आयुर्वेद, विज्ञान, ज्योतिष आदि का अनुवाद के साथ साथ तत्कालीन परिस्थितियों का जीवंत चित्रण किया

भारत में भी यात्राओं के माध्यम से मिलने वाली शिक्षा अनुभवों का भारतीय जीवन पद्धति और धर्म–दर्शन में विशेष स्थान रहा है। हमारे षट् दर्शन की परंपरा का विकास ही घुमंतू ऋषि-मुनियों पर टिका है, जिन्होने लंबे समय तक

विभिन्न अरण्यों, स्थानों की यात्राएं के माध्यम से साक्षात् ज्ञान की प्राप्ति की। तत्पश्चात जैन धर्म प्रवर्तकों विशेषकर महावीर स्वामी, बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति में उनकी यात्राओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा। शंकराचार्य अपने दर्शन अद्वैतवाद के प्रचार हेतु पूरे भारत का भ्रमण किया चारों दिशाओं में मठों की स्थापना की। इसी क्रम में अनेक वेदांत दार्शनिकों ने अपने जीवन दर्शन, प्रकृति के चर अचर संबंधों, जगत की गूढ़ रहस्यों की खोज हेतु यात्राओं का आश्रय लिया।

वस्तुतः किसी भी सिद्धांत का परीक्षण समाज में ही होता है और सिद्धांत की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके सिद्धांतकार ने कितने अधिक आयामों, दृष्टिकोणों, विविध अनुभवों आदि से उसे कितना पुष्ट है। इस पूरी प्रक्रिया में यात्रा व्यक्ति को अधिकाधिक 'वाह्य मुखी' 'स्व जागरूक' और 'अनुभवी' बनाती हैं। उसमें 'स्व' के साथ 'पर' को भी पहचानने समझने का हुनर देती है ।

इस दृष्टि से यात्राओं और उनके आधार पर लिखे गए वृत्तांतों में सिर्फ साहित्यकार नहीं होता उसमें इतिहासकार दर्शनशास्त्री , भूगोलविद् , समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, मानवविज्ञानी आदि सभी के तत्व, गुण समाहित हो जाते हैं। विभेद मात्र आत्मपरकता का रहता है क्योंकि यात्रा वृत्तांतों में वस्तुनिष्ठ वर्णन के साथ अपने 'स्व' का भी प्रेक्षण करते हुए घुमक्कड़ यात्री अपने अनुभवों को भी बयान करता जाता है

इस प्रकार यात्रा वृत्तांतों की सुदीर्घ परंपरा हिंदी साहित्य क्षेत्र में आकर और परिपक्व हुई है। इसमें अब तक हिंदी साहित्य में यात्रा वृत्तांतों की शुरुवात तो भारतेन्दु युग से ही हो जाती है लेकिन जो सबसे अधिक घुमक्कड़ी साहित्यकार रहे हैं उनमें राहुल सांकृत्यायन , अज्ञेय , नागार्जुन , निर्मल वर्मा आदि को इस के आधारभूत स्तंभ के रूप में रखा जा सकता है। जिन्होंने अपने पूरे जीवन काल में देश विदेश का भ्रमण कर अमूल्य निधियों का सृजन किया है। इनमें राहुल सांकृत्यायन ने तो अपनी यात्राओं के माध्यम से न सिर्फ स्थानों का रोचक वर्णन किया अपितु एक खोजकर्ता की भांति पाली, प्राकृत के , अपभ्रंश के महत्वपूर्ण ग्रंथों की खोज की साथ ही सिंघली , तिब्बतन भाषा के बौद्ध ग्रंथों के भारतीय संबंधों पर भी प्रकाश डाला। इसी तरह उन्होंने रूस, यूरोप की यात्रा के माध्यम से आर्य नस्ल के उत्पत्ति सिद्धांत तथा उनके भारत आगमन के संबंध में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वही अज्ञेय ने 'अरे यायावर रहेगा याद' में अपने देश विदेश की यात्राओं के माध्यम से स्थानों, लोगों पर गहन मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक विवेचन किया है जो इतना सरस बन पड़ा है कि पाठक अपने आप को उस परिवेश, वातावरण का हिस्सा मान लेता हैं। नागार्जुन भी अपनी यात्राओं में बिना किसी प्रकार के वैचारिक आग्रह के सीधे उस परिवेश, प्रकृति, समाज, संस्कृति को संबोधित करते हुए लिखते हैं। जिससे उनकी

शैली में गजब की अर्थवत्ता व सरलता का विशिष्ठ समावेश हुआ हैं। इसी तरह निर्मल वर्मा ने अपने यात्राओं के माध्यम से यूरोप का विशद वर्णन किया है जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में जन्मी 'हग्री जेनरेशन', 'बीट जनरेशन' तथा उनकी आस्तितावादी मानसिकता पर तथा बदल रहे समाज का बहुत ही सूक्ष्म अवलोकन किया है।

1990 के बाद पूरी विश्व व्यवस्था में व्यापक बदलाव आया पूर्व में व्याप्त नियमों वैचारिक ध्रुवीकरण की जगह उदारीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ । इसी क्रम में भारतीय अर्थव्यवस्था को भी नई आर्थिक नीति 1991 के तहत बदलते हुए उसका निजीकरण, वैश्वीकरण और उदारीकरण किया गया । जिससे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में व्यापक बदलाव आए साथ ही यात्रा संबंधी नियमों में छूट मिली संचार व परिवहन के साधनों के तीव्र विकास से यात्रा और अधिक सहज व रोचक बन गई।

जहां पहले यात्रा वृत्तांतकार अपने भ्रमण से पाठकों को नए स्थानों , सभ्यता , संस्कृति से परिचित कराते थे वहीं 1990 के बाद जब पर्यटन सर्व सुलभ हो गया । सूचना क्रांति व तकनीक तथा उन्नत परिवहन के साधनों के बल पर अब कोई भी पर्यटन कर सकता है। मिली सूचनाओं , स्थानों को सत्यापित कर सकता है । ऐसे में साहित्यकारों के लिए यात्रा वृत्तांत लेखन और अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है अगर स्थानों का वस्तुनिष्ठ वर्णन करता है तो वह कोई काम का नहीं है । आज आवश्यकता है कि साहित्यकार अपने भ्रमण के माध्यम से वहां के जनमन हृदय को टटोले , उन्हें संचालित करने वाले तत्वों को समझें , समाज की गहराइयों में व्याप्त मूल्यों का मूल्यांकन करें और विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने वाले तथा अलग करने वाले मूल्यों को पहचाने। हिंदी साहित्य में इस दौर में अनेक साहित्यकारों ने इस दृष्टि से यथेष्ट यात्रा वृत्तांतों सृजन किया है । जिसमें उनके अपने अनुभव , ज्ञान की विविधता से भ्रमण किए गए स्थानों को नवीन द्रष्टि से देखने का प्रयास किया है। वे इस प्रक्रिया में उस समाज भौगोलिक व मानसिक नक्शे को निर्मित करने में अत्यधिक सफल हुए है।

धर्मवीर भारती अपने यात्रा वृत्तांत यात्रा चक्र (1995) में लिखते हैं कि "यात्राओं में आप केवल भौगोलिक बिंदुओं से नहीं गुजरते हैं अपितु एक इतिहास के मोड़ से भी गुजरते हैं इतिहास के दौर से भी आप गुजरते हैं गुजर रहे होते हैं और विशाल वे सब उनका देश उनका समाज भी इतिहास के दौर से गुजर रहा होता है"। इसी प्रकार शिवप्रसाद सिंह 'सब्जा पत्र कथा कहे'(1996) , रितेश अग्रवाल 'लिबर्टी के देश में' (1997), बल्लभ डोभाल 'आधी रात का सफर' (1998) हिमांशु जोशी 'यात्रा के शिविर में' (1998) आदि में इन बातों को बड़ी सूक्ष्मता से उभारते हैं । नरेश मेहता का 'कितना

अकेला आकाश'(2003) नासिरा शर्मा का 'जहां फव्वारे लहू रोते हैं'(2003) तथा मनोहर श्याम जोशी का 'क्या हाल है चीन के', 'पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर' में वहां की सामाजिक स्थिति , लोगों के मानसिक चेतना को गहराई से परखने का प्रयास करते हैं। इसी क्रम में हरिराम मीणा की 'साइबर सिटी में नंगे आदिवासियों तक' (2001) में हमें उन परिवर्तनों को पहचानने में सहायता मिलती है जिन्हें हम निरंतर सभ्यता के नाम पर अपने ऊपर लबादे की भांति ओढ़ते चले आए हैं।

इस दौर की अगली कड़ी में कमलेश्वर का 'आंखों देखा पाकिस्तान' (2006) हमें हमें विभाजन के बाद बने दो राष्ट्रों जो सामान संस्कृतिक चेतना के वाहक थे के बीच फैले सांप्रदायिक विद्वेष को उजागर कर लोगों को दिलों को जोड़ने वाले तत्वों को उभारते हैं। इसी तरह विष्णु प्रभाकर का 'हमसफर मिलते रहे' (2006) में वे लिखते हैं, 'मनुष्य को सचमुच मनुष्य बनाने वाला अभी तक कोई विश्वविद्यालय नहीं आया है और शायद आ भी नहीं सकेगा और आगे वे कहते हैं। इसके लिए आवश्यक है चरैवेत –चरैवेति, यात्रा करो, यात्रा करो।'

मार्क ट्वैन ने कहा था की 'यात्रा पूर्वाग्रहों व संकीर्णताओं के लिए घातक है,' क्योंकि यात्रा कभी भी हम ही हम के भाव से नहीं की जा सकती उसमें अन्य के विचारों का भी सम्मान करना पड़ता है। इस दृष्टि से ग्लेशियर से निकलते जलधारा के समान यात्राएं समुद्र में मिलने तक ना जाने कितने तत्वों को सहज ही स्वीकार कर लेती है जैसे पानी हर प्रकार के भू प्रतिरूपों में बहते हुए चाहे वह विशाल गहरे गार्ज हो या समतल मैदान को सहज ही स्वीकार करता चलता हैं।

वर्तमान के यात्रा वृत्तांतों में असगर वजाहत का स्थान विशेष रूप से एक नई दृष्टि के साथ आता हैं, वे 'चलते चलो अच्छा है' (2008) 'अतीत का दरवाजा' (2018) में लिखते हैं कि 'यात्रा तो जीवन में सभी किसी न किसी प्रकार की करते हैं पर एक साहित्यकार यात्रा वृत्तांत में केवल उस स्थान का कोरा विवरण नहीं प्रस्तुत करता बल्कि उन जगहों की सांस्कृतिक विविधता और जीवन के रंगों को दिखाने का प्रयास करता है।'

अतः कहा जा सकता है की यात्रा वृत्तांतकार सिर्फ भौगोलिक स्थानों का ही भ्रमण नहीं करता है अपितु उस स्थान विशेष की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक सभी पक्षों से जुड़ी यात्राएं करता है। वह अपने कल्पना के घोड़ों से उस स्थान विशेष के सभी आयामों का अपनी सामर्थ्य भर यात्रा करता है और इस दृष्टि से यात्रा समय विशेष जुड़ी होते हुए भी अपनी हदों को तोड़ देती हैं। उसमें दर्शनशास्त्र, नीति शास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र , अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों का समावेश हो जाता है।इस बिंदु पर यात्रा वृत्तांतकार अपनी शारीरिक पदयात्रा के साथ मानसिक यात्राएं भी करता है जिससे नए-नए चित्रों, बिंबों, अनुभूतियों के पक्षों को छूता चलता हैं।

मेरे शोध में 1990 के बाद लिखे गए यात्रा वृत्तांतों का आलोचनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जब समाज तेजी से संक्रमण के दौर से गुजर रहा था , अधिकांश लोग मुक्तिबोध के शब्दों में 'उदरंभरि' बनकर रह गए हैं साथ ही सर्वत्र मूल्य हीनता का बोलबाला है। आर्थोपाय अर्जन हेतु लोग किसी भी मार्ग को अपनाने से नहीं हिचकते । इसके लिए चाहे दूसरे व्यक्तियों को अपने साध्य का साधन बनाना पड़े । साथ ही अब यात्राएं सुगम होने के कारण यात्रा वृतांतकार के लिए चुनौती होती है कि वह किस तरह अपनी यात्रा में नवीनता लाएं और कैसे उसे नवीन दृष्टि से देखें। इस चुनौती को असगर वजाहत ने अपने शब्दों में इस प्रकार लिखा हैं कि 'आज पर्यटन या यात्रा केवल शहरों इमारतों को देखने का नाम नहीं है , आज लेखक को नए समाज के उन छुपे हुए संबंधों को संचालित करने वाली अंतर्धराओ को देखना और समझना पड़ेगा जो यात्रा वृत्तांतों को नया और रोचक बनाते हैं। यह अधिक समय व जानकारी देने का काम है।'

शोध उद्देश्य -

आज सूचना क्रांति के समय में लोग किसी भी स्थान की जानकारी बहुत ही सहज माध्यम से सहज रूप में इंटरनेट से प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में किसी स्थान की जानकारी, उसके अंतर्तम में छिपे गूढ़ रहस्य की पड़ताल करना आवश्यक होता है विशेषता ऐसे समय में जब 'परिवर्तन ही सत्य है' की उक्ति और भी तेजी से चरितार्थ हो रही है ऐसे में यात्रा वृतांतकार अपनी पैनी व सूक्ष्म दृष्टि तथा सहृदय बुद्धि से समाज के हृदय में व्याप्त तत्वों को टटोलता है तथा विभिन्न संस्कृतियों में परिवर्तन के तत्वों की पहचान व आपसी संबंधों के बिंदुओं को सामने लाता है। इसलिए मेरे शोध का उद्देश्य इस दौर में लिखे गए यात्रा वृतांत का सूक्ष्म अवलोकन कर उनमें निहित सामाजिक , सांस्कृतिक तत्वों तथा परिवर्तनकारी तत्वों की पहचान करना है, मूल्यों को उद्घाटित करना है। जिससे उदारीकरण के उपरांत आए परिवर्तनों को, यात्रा वृतांत की शैली में परिवर्तन को, यात्रा वृतांतकार द्वारा आज यात्रा में किन मूल्यों को टटोलने का प्रयास किया जाता है आदि को उदारीकरण की पृष्ठभूमि के आलोक में समझना व नवीन निष्कर्षों को खोना है उन्मुख होना है।

शोध का महत्व -

शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करते हैं साथ ही ज्ञान भंडार को विकसित व पूर्व ज्ञान को परिमार्जित करते हैं। इसी आलोक में मेरे द्वारा शोध विषय 1990 के बाद यात्रा वृतांतों का आलोचनात्मक अध्ययन के माध्यम से वर्तमान दौर में जिसे आर्थिक क्षेत्र , वैज्ञानिक क्षेत्र में औद्योगीकरण का छठा चरण या ऑटोमेशन तथा एआई का दौर , समाज के क्षेत्र में

नवउदारीकरण या उत्तर आधुनिकता का चरण , जिसमें मानव के अस्तित्व को मिल रही नव चुनौती ,हमारे सभ्यतागत विकास से जन्मी पर्यावरणीय समस्याएं तथा मूल्य हीनता के दौर में यात्रा वृतांत में अभिव्यक्त इन सभी नव चुनौतियों का समेकित अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे विभिन्न समाजों संस्कृतियों के बीच साम्य व वैषम्य की पहचान करते हुए वर्तमान में जन्मे मतभेद के कारण को भूमंडलीकरण के आलोक में तेजी से हो रहे सांस्कृतिक संक्रमण के दौर में समझने में सहायता मिलेगी।

पूर्व में शोध कार्य व शोध की मौलिकता -

पूर्व शोध कार्य – शोधगंगा तथा विभिन्न विश्वविद्यालय की वेबसाइट में मिली जानकारी के अनुसार यात्रा वृतांत पर अब तक निम्न लिखित शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं।

1–हिंदी के स्वतंत्रता उपरांत यात्रा साहित्य (1996), बाबा साहब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय।

2–हिंदी की यात्रा वृतांत प्रकृति एवं प्रदेय (2013) राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

3– हिंदी यात्रा साहित्य एवं राहुल सांकृत्यायन (1994) वीबीएस पूर्वांचल यूनिवर्सिटी

4– यात्रा साहित्य की परंपरा एवं धर्मवीर भारती के यात्रा साहित्य

5– हिंदी यात्रा साहित्य सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अनुशीलन (1998), चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय

6– हिंदी के चयनित यात्रा वृतांतों का आलोचनात्मक अध्ययन (2021), गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय

7– हिंदी यात्रा सहित के गद्य स्वरूप और मूल्यांकन(1990),छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय

8– अन्य अज्ञेय, निर्मल वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि पर कार्य संपन्न हुआ हैं।

मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य पूरी तरह से मौलिक हैं क्योंकि इस विषय पर विशेषकर 1990 के पूरी पृष्ठभूमि को आधार बनाकर यात्रा वृतांत पर शोध कार्य अभी तक नहीं हुआ, क्योंकि यह दौर तीव्र सांस्कृतिक संक्रमण का काल रहा है जिसके प्रभाव सभी क्षेत्रों में व्यापक हो रहे, जिसे सूक्ष्मता से समझने व शोधित करने की आवश्यकता है।

शोध की प्रविधियां -

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोध के गहन एवं आलोचनात्मक अध्ययन हेतु , शोधार्थी द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों हेतु समाजशास्त्री विधि एवं साहित्य संबंधित विषयों के अध्ययन हेतु आलोचनात्मक विधि साथ ही अन्य विषयों के अध्ययन हेतु विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक शोध प्रविधि आदि का विषय अनुरूप प्रयोग करना है।

शोध कार्य की योजना एवं अध्याय विभाजन

समकालीन प्रमुख यात्रा वृत्तांतों की प्रकृति, प्रवृत्ति और समस्याओं का अध्ययन

रूपरेखा

प्रथम अध्याय – समकालीन यात्रा वृत्तांत : एक अवलोकन

1–संबंधित कथ्य एवं परंपरा

2–यात्रा वृत्तांत परंपरा के श्रेष्ठ पुरोधा

3–समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीति, आर्थिक स्थितियां

4–यात्राओं से जुड़ी वस्तु स्थिति एवं चुनौतियां

द्वितीय अध्याय –समकालीन यात्रा वृत्तांत एवं संवेदनागत परिवर्तन

1–इस दौर में रचित यात्रा वृत्तांतों में संबोधित नव कथ्य की प्रकृति और प्रवृत्ति

2–नवीन चुनौतियां सामाजिक, सांस्कृतिक संबंधों की स्थितियां

3– भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की पृष्ठभूमि

4– मुक्त बाज़ार और पर्यटन, यात्राओं में सहायता संबंधी परिवर्तन ,

5– पर्यटन को लेकर जन दृष्टिकोण और साहित्यकार की दृष्टि में अंतर

तृतीय अध्याय –सूचना और संचार क्रांति के आलोक में यात्रा वृत्तांत

1–21वीं सदी बहुध्रुवीय विश्व और यात्रा वृत्तांत

2–उत्तर आधुनिकता, इन्टरनेट ,स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में यात्राओं की प्रासंगिकता

3–समकालीन यात्रा वृत्तांत में नव उदारवाद,उपभोक्तावाद के आलोक में सामाजिक सांस्कृतिक समस्याएं

4–यात्रा वृत्तांतों में अभिव्यक्त समकालीन सामाजिक सांस्कृतिक समस्याएं औवृत्तांत

चतुर्थ अध्याय–समकालीन धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटन का नव स्वरुप

1–धार्मिक पर्यटन की वैचारिकी और वर्तमान स्थिति

2–विश्व में उभरते धार्मिक , सांस्कृतिक संरक्षणवाद, कट्टरता के आलोक में यात्रा वृत्तांतों का प्रदेय

3–भारत तथा विश्व में विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक केंद्रों पर लिखित समकालीन यात्रा वृत्तांत

पंचम अध्याय –वर्तमान पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी समस्याएं यात्रा वृत्तांतों के आलोक में

1–यात्रा वृत्तांतकारों की नजर से पर्यावरणीय विमर्श

2–विभिन्न संस्कृतियां और उनके पर्यावरण संबंधी विचार

3–मानव वन्य जीव सहयोग और टकराव

4–मानव युग (एंथ्रोपोजेनिक इरा) और विकास जनित समस्याएं

5–समकालीन यात्रा वृत्तांतों में व्यक्त समाधान

षष्ठम अध्याय– ऐतिहासिक सांस्कृतिक, पुरातात्विक संदर्भ

1–अस्मिता बोध और इतिहास बोध; यात्रा वृत्तांतकारों की नज़र से

2–पुरातात्विक साक्ष्य और मानव विकास की यात्रा तथा यात्रा वृतांत

3–लुप्त होती अस्मिताऐं(जनजातीय समाज के परिपेक्ष्य में)

4–वर्तमान ज्ञान के युग में यात्रा वृतांतों का भविष्य

उपसंहार-

परिशिष्ट-

आधार ग्रंथ-

सहायक ग्रंथ-

पत्र पत्रिकाएं-

ऑन लाइन स्रोत-

आधार ग्रंथ-

1– राम दशरथ मिश्र– तना हुआ इंद्रधनुष (1990), भोर का सपना (1993), पड़ोस की खुशबू (1999)–राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

2– धर्मवीर भारती –यात्रा चक्र (1995)– वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली ।

3– शिव प्रसाद सिंह– सब्जा पत्र कथा कहे (1996) –राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

4– विष्णु प्रभाकर– हमसफ़र मिलते रहे (1996), हँसते निर्झर : दहकती भट्ठी (2005)– कादंबरी प्रकाशन, दिल्ली ।

5– हिमांशु जोशी – यातना शिविर में (1998) –राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

6– मंगलेश डबराल– एक बार आयोवा (2002)– राधाकृष्ण पेपरबैक्स , नई दिल्ली ।

7– नासिरा शर्मा– जहां फव्वारे लहू रोते हैं (2003)–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

8– हरिराम मीणा –साइबर सिटी से नंगे आदिवासी में तक (2001)– शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली ।

9– पंकज बिष्ट– ख़रामा ख़रामा (2002)– अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश ।

10– असग़र वजाहत–चलते तो अच्छा था (2008), अतीत का दरवाज़ा (2018)– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

11– कृष्णा सोबती– बुद्ध का कमंडल लद्दाख़ (2013)–राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ।

12– ओम थानवी– मुअनजोदड़ो (2011)–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

13– विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी –अमेरिका और यूरप में एक भारतीय मन(2012)–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

14– पुरुषोत्तम अग्रवाल– हिंदी सराय अस्त्राखान वाया येरेवान (2012)–राजकमल प्रकाशन,दिल्ली।

15–अनुराधा बेनीवाल – आज़ादी मेरा ब्रांड (2016)–राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली।

16– राकेश तिवारी– सफर एक डोंगी में डगमग (2014), अफगानिस्तान से खत-ओ-किताबत(2021)–राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

17– कुसुम अंसल– सरे राह चलते चलते (2016)–राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

18– प्रयाग शुक्ल– सम पर सूर्यास्त (2002)–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

19– मनोज सिंह– सपनों का शहर दुबई (2017)– किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली ।

20– कृष्ण कुमार– अब्दुल मजीद का छुरा(2017)– किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली ।

21– विश्वनाथ तिवारी –अंतहीन आकाश (2017), आत्म की धरती (1997)– किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली

22– रामजी तिवारी – लद्दाख में कोई रेंचो नहीं रहता (2017)–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

23– आलोक रंजन –सियाहत (2018)– भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।

24– ऋतुराज– चीन की डायरी (2018) –राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

25– उमेश पंत– दूर दुर्गम दुरुस्त (2020)– राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

सहायक ग्रंथ –

1–भारतेंदु हरिश्चंद्र– सरयू पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा (भारतेंदु के निबंध –केसरी नारायण शुक्ल)–सरस्वती मंदिर जतनबर, वाराणसी।

2–राहुल सांकृत्यायन – घुम्मकड़ शास्त्र, मेरी तिब्बत यात्रा, किन्नर देश में–किताबमहल प्रकाशन, इलाहाबाद ।

3–अज्ञेय –अरे यायावर रहेगा याद –राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4–निर्मल वर्मा –चिड़ों पर चांदनी–भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ।

5–यशपाल –लोहे के दीवार के दोनों ओर– राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली ।

6–रामवृक्ष बेनीपुरी – पैरों में पंख बांध कर–मीडिया पब्लिशिंग हाउस।

7–मोहन राकेश –आ़खिरी चट्टान तक–प्रगति प्रकाशन,नई दिल्ली ।

8– गोविंद मिश्र – झूलती जड़ें (1990), परतों के बीच में (1997) –वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

9– अजीत कुमार –यहां से कहीं भी (1997)– किताबघार प्रकाशन नई दिल्ली।

10– सीतेश आलोक –लिबर्टी के देश में (1997)– प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।

11– बल्लभ डोभाल– आधी रात का सफर (1998)– किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली ।

12– कृष्ण दत्त पालीवाल –जापान में कुछ दिन (2003)–किताबघर प्रकशन नई दिल्ली ।

13– मनोहर श्याम जोशी– क्या हाल है चीन के(2006)– पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर (2006) वाणी प्रकाशन नई दिल्ली ।

14– रामशरण जोशी– अपनों के पास अपनों से दूर(2012)– सामायिक प्रकाशन दिल्ली।

15– श्याम विमल– पाकिस्तान में वक्त से मुलाकात (2013)– किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली।

16– एकांत श्रीवास्तव– चल हंसा वा देश (2014)– सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली।

17– ओमा शर्मा –अंतरयात्राएं वाया वियना (2016) आधार प्रकाशन, पंचकुला , हरियाणा ।

18– महेश कटारे– देस बिदेस दरवेश (2017)– भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली।

19– अभय मिश्रा –दर-दर गंगे (2013)– पेंगुइन बुक्स नई दिल्ली।

20- हरी ओम– कैलाश मानसरोवर यात्रा (2021)–अंतिका प्रकाशन , गाजियाबाद,उत्तर प्रदेश।

पत्र पत्रिकाएं-

1- आजकल (मासिक)- प्रकाशन विभाग, सूचना भवन ,नई दिल्ली|

2- हंस -अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली |

3- आलोचना (त्रैमासिक)- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |

4- नया ज्ञानोदय -भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली |

5- पाखी -इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव्स सोसाइटी|

6- अहा! जिंदगी - दैनिक भास्कर समूह।

वेबसाइट-

http://inflibnet.ac.in

shodhganga.inflibnet.ac.in

http://hiwikipedia.org

http://booksgoogle.co.in